प्रथम अध्याय

‘ओमप्रकाश वाल्मीकि जीवन परिचय एवं साहित्य’

प्रथम अध्याय - ओमप्रकाश वाल्मीकि जीवन परिचय एवं साहित्य

प्रस्तावना -

भारतीय समाज व्यवस्था धर्म को आधारभूत मानती है । धर्म एवं जाति के नाम पर धर्मग्रंथो के माध्यम से दलितों का शोषण सदियों से हो रहा है । उन्हें अपने हक्क और अधिकारों से वंचित रखा है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकि स्वयं दलित हैं । उन्होंने जो भोगा है वही अभिव्यक्त किया है । उन्होंने अपनी संवेदात्मक प्रक्रियाएँ तथा अनुभूति के स्तर को अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया है । उनके वैयक्तिक भाव सामाजिक लगते हैं । ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताएँ दलित जीवन की संवेदनशीलता और अनुभवों की कविताएँ हैं जो एक ऐसे यथार्थ से साक्षात्कार कराती हैं, जहाँ हजारो साल की पीडा अँधेरे कोनों में डुबकी पडी है । वे दलितों में चेतना जगाने या अधिकारों के लिए लढने के लिए प्रेरणादायी रहे हैं ।

वाल्मीकिजी में दलित चेतना के प्रति तीव्र उत्सुकता और सतर्क संवेदनशीलता है इसलिए वाल्मीकिजी अपनी रचनाशीलता के सामने कडी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं । वाल्मीकिजी की कविताओं में मनुष्य की प्रतिष्ठा है, जाति की पीडा है, वर्ण व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह हैं, समतावादी समाज की परिकल्पना है, मुक्ति संग्राम है, स्वतंत्रता की आकांक्षा है, लोकतांत्रिक आस्थाएँ हैं, चुनौतियों से मुकाबला करने का साहस है, संघर्ष है, प्रतिशोध है, स्वाभिमान का बोध है और सामाजिक परिवर्तन का लक्ष्य है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने हिंदी दलित साहित्य में एक सशक्त पहचान बनाई है । उनका काव्य संग्रह 'बस्स!- बहुत हो चुका' इसका प्रमाण है । वाल्मीकिजी की कविताओं में दलित जीवनगत अन्तर्विरोधों के परिणामस्वरुप उत्पन्न विसंगतियों और तनाओं की यातनाएँ भोग रहा है । जाति और वर्ण व्यवस्था मानव को इन्सानीयत के एहसास से वंचित कर रही है । वाल्मीकिजी की कविताएँ दलितों के जीवन संघर्ष और उनकी बेचैनी का जीवंत दस्तावेज है । उनकी कविताओं में दलित जीवन की व्यथा, छटपटाहट और सरोकार साफ-साफ दिखाई पडते हैं ।

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी के साहित्य की मांग जातिभेद, अंधश्रध्दा का त्याग तथा आदर्श जीवन निर्माण करना है, जो संपूर्ण मानव जाति को जातीय सीमा लांघकर मानवता के मार्ग पर अग्रेसर करता रहे । व्यावहारिक दृष्टि से वाल्मीकिजी का व्यक्तित्व अंत्यत सरल, सहज एवं स्वाभाविक है । जिसे कोई

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

भी देखे तो श्रध्दापूर्वक पुलकित हो जाय। उनमें आक्रोश भी है प्रतिशोध की भावना भी है। वाल्मीकिजी ने जहाँ एक ओर दलित उत्थान को कविता के माध्यम से स्पष्ट किया है वहीं दूसरी ओर कहानी, नाटक एवं आत्मकथा के द्वारा भी अपनी पत्रिका के माध्यम से दलित साहित्य को आधार रुप दिया। 'जूठन' जैसी उनकी आत्मकथा पढ़ने पर ऐसा लगता है, वाल्मीकिजी ने अपने उस 'आत्म' की तलाश करने की कोशिश की है जिसे भारतीय समाज व्यवस्था ने सदियों से कुचलने का प्रयास किया है। वाल्मीकिजी का व्यक्तित्व जूठन आत्मकथा से स्पष्ट हो जाता है। इसमें अंकित पंक्तियों में पीडा भी है असहायता, आक्रोश भी है और मानवीयता भी है ।

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी के जीवन के विविध पहलूओं को शब्दों में बाँधना संभव नहीं। फिर भी उनकी साहित्यिक कृतियों को समझ लेने हेतु उनके व्यक्तिगत जीवन को समझ लेना आवश्यक है इसी उद्देश्य से उनके व्यक्तित्व का परिचय प्रस्तुत है।

1.1 व्यक्तित्व -

1.1.1 जन्म-तिथि एव जन्मस्थान -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने एक गरीब परिवार चुहड़े जाति मे जन्म लिया। आपका जन्म 30 जून, 1950 को बरला, जनपद मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) में हुआ।

1.1.2 माता-पिता

ओमप्रकाश वाल्मीकि के माताजी का नाम 'मुकुंदी' था। लेकिन सब लोग उन्हें 'खजुरीवाली' इस नाम से पुकारा करते थे । सहारनपुरी जिले में हिंडन नदी के किनारे 'खजुरी' नाम का एक गांव है, जो लेखक का ननिहाल है-इसी खजूरी गाँव से होने के कारण लेखक की माताजी को सब 'खजूरीवाली' नाम से बुलाते थे। लेखक उनकी माताजी से बहुत प्रभावित थे। लेखक के पिताजी का नाम छोटनलाल था। वे अनपढ़ थे। लेकिन ओमप्रकाशजी को पढ़ाने में पिताजी ने कोई कसर नहीं छोडी। खुद को खाना नसीब न हो ऐसी हालत में भी अपने बेटे को पढाने की जिद्द पिता के मन में पनपती थी। हमारा बेटा पढ़ेगा तो हमारी जाति सुधरेगी यही उनकी शिक्षा के प्रति अपेक्षा थी। अपने बेटे को पढ़ाने के लिए बहुत सारी मुश्किलों को सामना उन्हें करना पडा।

1.1.3 बाल्यकाल -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी सबसे छोटे होने के कारण माता-पिता का प्यार सबसे ज्यादा मिला। इसी कारण ही शिक्षा के प्रति दृष्टिकोन प्रतिकुल परिस्थिति में भी आशावादी था लेकिन घर के बाहर हा परिवेश कुछ अलग ही था। वाल्मीकिजी ने बाल्यकाल में ही एक ऐसी समाज व्यवस्था में साँसे ली जहाँ बेहद क्रूरता और अमानवीयता रही। वाल्मीकिजी का बाल्यकाल एक ऐसे बगड में बीता जहाँ " चारों तरु गंदगी भरी होती थी। ऐसी दुर्गंध कि मिनट भर में साँस घुट जाएँ। तंग गलियों में घूमते सूअर, नंग धडंग बच्चे, कुत्ते, रोजमरी के झगडे बस यह था वातावरण जिसमें बचपन बीता।"[1] सबसे छोटे और लाडले होने के कारण स्कूल भेजे गए। लेकिन जाति और दलित जीवन क्या होता है वह बचपन से ही देखना और सहना पडा था। अत: वाल्मीकिजी का बाल्यकाल अनेक शोषण एवं यातनाओं के बीच बीता।

1.1.4 परिवार -

ओमप्रकाश का संयुक्त परिवार था उसमें में पाँच भाई, एक बहन, दो चाचा और एक ताऊ आदि रहते थे। आर्थिक संभावना के कारण बिना काम उनको रोटी नसीब न थी। गाँव के जमींदारो त्यागी (तगाओं) के घर जाकर साफ-सफाई से लेकर खेती-बाडी, मेहनत-मजदुरी और रात-बेरात बेगारी करके परिवार की जीविका चलाया करते थे। इन कामों के बदले इन्हें अनाज या पैसे से ज्यादा गाली-गलोज और प्रताड़ना ही मिलती थी। दुर्बलता के कारण यह सब सहना ही उस समय बुद्धिमानी का काम था। ओमप्रकाश वाल्मीकि भी बचपन में इस तरह के काम करके अपने परिवारवालों की मदत करते थे।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के पर दादा का नाम जाहरिया था। उन्हें बुद्ध और कुंदन यह दो लडके थे। कुंदन को मोल्हड, सोल्हड और श्यामलाल यह तीन लडके और छोटी एवं श्यामो यह लड़कियाँ थी। बुद्ध के सुगमचंद और छोटनलाल यह दो बेटे थे। छोटनलाल लेखक के पिता हैं इन्हे सुखबीर, जगदीश, जसबीर, अनेसर और ओमप्रकाश (लेखक) यह पाँच बेटे एवं माया और सोमती यह दो बेटियाँ थी। सोमती की मृत्यु दो साल की आयु में हो गयी थी। ओमप्रकाश वाल्मीकिजी लडकों में सबसे छोटे थे, इस वजह से परिवार का उन्हें ज्यादा प्यार मिला।

---

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौंदर्य का सौंदर्यशास्त्र (दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन: प्रथम संस्करण 2001), पृ. 11

1.1.5 शिक्षा -

ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म दलित परिवार में होने के कारण बचपन से ही अनेक समस्याओं का सामना करना पडा। शिक्षा के प्रति बाल्यावस्था से ही लगाव रहा। प्रांरभिक शिक्षा अपने गाँव बरला में प्रारंभ की पर नाम के साथ शुद्र शब्द जुडा होने के कारण शिक्षा में मार्गदर्शन मिलने के स्थान पर क्रुर यातनाएँ मिली। शिक्षक ही माँ-बहन की गाली देते जो उन्हें झेलना पडता। ऐसी स्थिति में जब कोई गलती ही न की हो तब भी शिक्षक 'अबे चूहड़े के' कहकर पुकारते और पूरी क्लास में अपमानित करते। लेखक लिखते हैं ''मास्टर सेवक राम मसीही के खुले, बिना कमरों, बिना टाट-चटाईवाले स्कूल में अक्षर ज्ञान शुरु किया था।''[1] उसके बाद बेसिक प्रायमरी विद्यालय में बडे चक्कर काट-काटकर दाखिला कराया गया था। डर के साएँ में रहकर शिक्षा के लिए तमाम कष्ट एवं प्रताड़ना सहनी पडती थी। त्यागियों के बच्चे स्कूल में चूहड़े कहके हमेशा चिढ़ाते थे। स्कूल में प्यास लगे तो हैंडपंप के पास खडे होकर किसी के आने का इंतजार करना पडता था। हैंडपंप को छूने पर लडके पीटते और मास्टरजी सजा देते थे। वाल्मीकिजी स्कूल इसलिए गए थे कि मास्टरों द्वारा सभ्यता के गुण, आदर्श, अनुशासन एवं नैतिकता के आदर्शों की शिक्षा मिल सके लेकिन ऐसे आदर्शों की अपेक्षा जातीय हीनता से प्रताडित करना, जाति सूचक गाली गलौच देना इन मास्टरों के ही व्यवहार में था। लेखक को स्कूल में शिक्षा कम, काम ज्यादा करना पडता था। हेडमास्टर के आदेश पर स्कूल के कमरे बरामदे और मैदान भी साफ करने पडते थे। इसी बुरी हालत में उन्होंने कॉलेज में प्रवेश किया। चूहड़े जाति के होने के कारण उन्हें सिर्फ अपमान ही सहना पड़ा था। ग्यारहवी अच्छे अंको से पास होने पर इन्हें बारहवी कक्षा में ज्यादा कष्ट उठाने पडे। लेखक लिखते हैं - ''भविष्य इसी परीक्षा के परिणाम पर टिका था। कई महीने तक जब मैं प्रॅक्टिकल नहीं कर पाया तो मुझे ऐसा महसूस होने लगा था, जैसे जानबूझकर ऐसे किया जा रहा है एक ------ रोज उसने मुझे सभी के सामने अपमानित भी किया था। और प्रयोगशाला से बाहर कर दिया था। मैंने पूछा भी था, मेरी गलती क्या है ? कोई नुकसान मुझसे हुआ है लेकिन बृजपाल सुनने को तैयार ही नहीं था।''[2] मास्टर बृजपाल ने प्रॅक्टिकल नहीं करने दिया परिणामस्वरुप वे फेल हो गए।

---

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन (नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन: प्रथम संस्करण 1999), पृ. 12
2. .... वही ...., पृ. 81

उसके बाद बरला कॉलेज को हमेशा के लिए छोडकर डी.एवी कॉलेज देहराडून में दाखिला लिया जो देहराडून इंद्रेश नगर में था। वाल्मीकिजी ने अपनी उच्च शिक्षा एम.ए. हिंदी गढ़वाल विश्वविद्यालय (श्रीनगर) से की। फिर तकनीकी शिक्षा जबलपुर एवं मुम्बई से ग्रहण की जिसने आज तक उनका साथ दिया है।

1.1.6 नौकरी -

वाल्मीकिजी बारहवी कक्षा में पढते थे तब एक चर्चा सुनी कि रायपुर के बम-फैक्टरी में हायस्कूल पास लडके भरती करवाने लाते हैं। इसलिए डाक से अपना नाम भेज दिया। कुछ दिनों बाद लिखित परीक्षा हुई जिसमें लेखक का चयन हुआ। अप्रैंटीस बनकर लेखक को आर्डिनैस फॅक्टरी देहराडून में काम करने लगे। प्रशिक्षण के बाद प्रतियोगात्मक परीक्षा हुई जिसमें वे भी चुने गए। इस चयन ने उनके जीवन के लिए नए द्वार खोल दिये। कुछ दिनों बाद ढाई वर्ष के प्रशिक्षण के बाद आर्डिनँस फैक्टरी, चांदा (चंद्रपुर, महाराष्ट्र) में भी काम किया।

1.1.7 विवाह -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी का विवाह 23 वर्ष की आयु में 17 दिसबंर, सन 1973 को चन्द्रकला उर्फ चंदर उर्फ चंदा से हुआ। चंदा जो वाल्मीकिजी की भाभी (स्वर्ण लता) की बहन हैं, समझदार और पत्नी के महत्व को जानने वाली स्त्री हैं जिन्होंने ओमप्रकाश वाल्मीकिजी का हर समय और हर पल साथ दिया और आज भी अपनी भूमिका का सफल रुप में निर्वाह कर रही हैं।

1.1.8 संतान -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी की कोई संतान नहीं है। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी अपने पाठक एवं छात्रों में संतान का स्नेह पाते हैं। इसलिए संतान का अभाव उन्हें खटकता नहीं।

1.2 ओमप्रकाश वाल्मीकि के व्यक्तित्व के कुछ पहलू -

1.2.1 साहसी एवं सत्यप्रिय -

ओमप्रकाश वाल्मीकि चूहड़े जाति से होने के कारण बचपन से उन्हें बहुत सारे जातीय दंश झेलने पडे थें। लेकिन ऐसी स्थिति में भी वे डगमगाते नहीं थे। कोई व्यक्ति नाम या जाति पूछे तो वे बेहिचक बताते चूहड़ा या भंगी। एक दिन मास्टरजी ने ओमप्रकाश और भिक्खूराम को गेहू लाने अपने गाँव भेजा। मास्टरजी के घरवालों ने उन दोनों को खाना खिलाया। कुछ देर बाद ओमप्रकाश को घर के बुजूर्ग ने

जाति पूछी, तो उन्होंने सीधा बता दिया 'चूहड़ा' । तो गुस्से से उस बुजुर्ग ने लाठी भिक्कूराम के पीठ पर मारी और वहाँ से भगा दिया । भिक्कूराम ओमप्रकाश वाल्मीकिजी पर गुस्सा करता और कहता है - "'झूठ बोलकर अच्छा खाना मिला, इज्जत मिली और सच बोलकर लाठी खाई, बेइज्जती हुई ।''[1] सत्य से सामना करना ही ओमप्रकाश वाल्मीकिजी का धर्म है । जाति छिपाकर झूठ बोलकर झूठा मान सम्मान प्राप्त करना उन्हें पाप लगता है ।

1.2.2 वाचन में विशेष अभिरुचि -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी को पढने का शौक था । उन्होंने अपने स्कूली जीवन में ही अनेक पुस्तकें पडी थी । जब वे आंठवी कक्षा में थे तब रवींद्रनाथ टैगोर, शरदचंद्र, प्रेमचंद्र आदि को पढ़ डाला था । शरदचंद्र के पात्रों से वे बहुत प्रभावित हुए थे । उन्होंने अपनी अन-पढ़ माँ को यह साहित्य पढकर सुनाया । 'आल्हा', 'रामायण', 'महाभारात', से लेकर 'सूरसागर', 'प्रेमसागर', 'सुखसागर', प्रेमचंद्र की कहानियाँ, 'तोता मैना' के किस्से ..... जो भी मिला सुना दिया''[2] । पढ़ने की आदत चूप नहीं बैठने देती थी । उनका मराठी साहित्य के प्रति भी गहरा लगाव रहा । दलित साहित्य मराठी साहित्य को नई पहचान दे रहा था, तब दया पवार, नामदेव ढसाळ, गंगाधर पाणतावने, बाबुराव बागुल, केशव मेश्राम, नारायण सुर्वे, यशवंत मनोहर आदि के साहित्य ने ओमप्रकाश वाल्मीकिजी के मन पर गहरा प्रभाव छोड दिया । अत: बचपन से ही व्यापक वाचन क्षमता आप में रही ।

1.2.3 नाटकप्रिय -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने चंद्रपूर (महाराष्ट्र) में 'मेघदूत' नाम की नाट्य संस्था निकाली थी । अपनी पत्नी के साथ कई नाटकों का मंचन भी किया था । 'आधे-अधुरे', 'दुलारीबाई' 'हिमालय की छाया', 'सिंहासन खली है' आदि नाटकों का सफल मंचन किया । कई बार उन्हें सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार भी मिला है । 'हिमालय की छाया', 'आधे अधुरे' नाटक की केंद्रिय भूमिका के लिए पत्नी चंदा जी को भी सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिल गया था । सही है कि वाल्मीकिजी को नाटक से आज भी उतना ही लगाव है ।

---

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन (नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन: प्रथम संस्करण 1999), पृ. 66

2. .... वही ...., पृ. 27

1.2.4 अभिनय में रुचि -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी को नाटकों का निर्देशन करने के साथ-साथ अभिनय करने की चाहत भी थी। मराठी नाटक 'मोरुची मावशी' के अनुदित हिंदी नाटक में मूल भूमिका के कारण लोग रंगकर्मी के रुप में पहचानने लगे थें। 'इकतारे की आँख', 'दो चेहरे', 'अंधो का हाथी', 'अ स्टडी इंन द नेड', आदि नाटकों में सफल अभिनय किया है। चर्चित निर्देशको के साथ काम करने का अवसर मिला। मराठी नाटक 'सखाराम बाइंडर', 'खामोश अदालत जारी है', 'हयवदन', आदि नाटकों में अमरीश पुरी, अमोल पालेकर, सुलभा देशपांडे आदि के साथ अभिनय से वाल्मीकिजी बहुत प्रभावित थे।

1.2.5 अनेक भाषाओं का ज्ञान -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी उत्तरप्रदेश से होने के कारण वहाँ की पंजाबी और हरियानी भाषा से मेल खानेवाले कौरवी भाषा तो बोलते ही हैं। साथ ही हिंदी, मराठी, पंजाबी, बंगला आदि भाषाओं पर भी उनका अधिकार है।

1.2.6 अंधश्रध्दा के विरोधी -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी की बस्ती के लोग अंधश्रध्दा पर बहुत विश्वास रखते थे। कोई बीमार पडता तो इलाज दवा दारु के बदले बुवा द्वारा मारपीट होती थी। एक बार वे खुद बीमार हुए थे, तब दवा दारु चल रही थी। लेकिन ठीक उसी समय एक रिश्तेदार आए और कहने लगे इसे तो ओवरा (भूत की लपेट) है। वह बुवा बाजी थोडी देर जमीन पर बैठा रहा और अचानक हिलने लगा। कपडों का कोडा बनाकर वह उन्हें पीटने लगा। पहले से कमजोर और उपर से मार उन्हें बहुत गुस्सा आया और चिल्लाकर बोले -''मुझे जान से मार डालेगा यह। इसे रोको। मुझे भूत-बूत कुछ नहीं चिपटा हैं।''[1] वह चुपचाप बैठ गया। लेखक लिखते है -''मेरा विश्वास और पुख्ता हो गया था कि यह सब ढोंगबाजी है, जहाँ आस्था के सामने तर्क कोई मायने नहीं रखता था। न जाने कितने लोग इन भगतों ने मार डाले।''[2] उनके दो भाई सही दवा-दारु न मिलने से चल बसे थे। घर में शादी में सुअरों को बलि चढाने की प्रथा थी, उन्होंने खुद अपनी शादी में बलि प्रथा का विरोध किया था। इससे स्पष्ट है कि ओमप्रकाश

---

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन (नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन: प्रथम संस्करण 1999), पृ. 56
2. .... वही ...., पृ. 56

वाल्मीकिजी अंधश्रध्दा से कितनी नफरत और विरोध करते हैं।

1.2.7 शिक्षा के लालसी -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी को स्कूली शिक्षा के दरमियान बहुत कुछ सहना पडता था। तभी देश को आजादी मिली थी। स्कूल में दलितों की पूर्णता विपरित स्थिति थी। लडकों द्वारा अपमान और मास्टरों द्वारा मार, मास्टरों के आदर्श से ज्यादा दहशत में वाल्मीकिजी ने अपनी पढाई पूरी की। मास्टरजी की दहशत मन पर इतनी छाई है कि अगर कोई सामने आदर्श गुरु की बात करता है तो उन्हें - ''वे तमाम शिक्षक याद आते हैं जो माँ बहन की गालियाँ देते थे। सुंदर लडकों के गाल सहलाते थे और उन्हें अपने घर बुलाकर उनसे वहियातपन करते थे।''[1] लेकिन उन्होंने शिक्षा के प्रति अपनत्व की भावना कभी नहीं छोडी। तमाम कष्ट एवं यातनाओं को झेलते हुए शिक्षा हासिल की क्योंकि अपने माता-पिता के तमाम कष्टों को न्याय देना था। इसलिए पूर्णत: विपरित स्थिति में भी उनके मन में शिक्षा की लालसा थी।

1.2.8 जाति में फँसे ओमप्रकाश -

ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित समाज से होने के कारण समाज में अनेक समस्या एवं अपमान से युक्त अनुभवों का सामना करना पडा। बचपन ऐसे वातावरण में बिता जहाँ मिनटभर की साँस में दम घुँट जाए। घर के पीछे सार्वजनिक खुला शौचालय था, ऐसे माहौल में बचपन बिता। स्कूल में अन्य बच्चों से दूर बैठना पडता था ''त्यागियों के बच्चे चूहड़ेका कहकर चिढाते थे। कभी-कभी बिना कारण पिटाई भी कर देते थे।''[2] इस कारण वाल्मीकिजी अंतर्मुखी और चिडचिडे बनते गये। स्कूल में ऐसी स्थिति थी कि स्कूल छोडकर जाना पडता था । वाल्मीकिजी साफ सुधरे कपडे पहनकर स्कूल जाते तो लडके कहते - ''अब चुहडेका नए कपडे पहनकर आया है। मैल पुराने कपडे पहनकर स्कूल जाओ तो कहते अबे चूहड़े के दूर हट बदबु आ रही है।''[3] स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जाति के कारण शामिल नहीं होने देते थे।

आज भी जाती के कारण शब्द झेलने पड रहे हैं। वे कहते हैं -''मेरे ऐसे कई मित्र हैं जो बाहर गले

---

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन (नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन: प्रथम संस्करण 1999), पृ. 56
2. .... वही ...., पृ. 13
3. .... वही ...., पृ. 13

[illegible library stamp]

मिलते हैं, साथ-साथ चाय पीते हैं, लेकिन मेरे घर में आने से कतराते हैं। पीठ पीछे आलोचना करते हैं।''[1] वाल्मीकिजी आज भी ऐसे वातावरण का सामना डरकर कर रहे हैं ।

1.2.9 वाल्मीकि नाम का महत्व -

ओमप्रकाशजी को 'वाल्मीकि' शुभनाम के कारण बहुत पीड़ाएँ दु:ख दर्द परेशानी सहनी पडी। इस शुभनाम से लगाव के कारण जाति का बोध होता है। उनके एक मित्र का कहना था 'वाल्मीकि' शुभनाम के कारण लेखक जानबुझकर ब्राह्मणवादी दलदल में फँसे है, 'वाल्मीकि' शुभनाम छोड देना चाहिए। उनकी पत्नी चंदा भी यही चाहती थी। ओमप्रकाशजी की भतीजी सीमा को कॉलेज में पूछा गया कि आप ओमप्रकाश वाल्मीकि को जानती हैं ? तब सीमा ने कक्षा में नजर डाली और इन्कार कर दिया। सीमा ने सफाई में कहा ''सभी के सामने अगर मैं मान लेती कि आप मेरे चाचा हैं तो सहपाठियों को मालूम हो जाता है कि मैं वाल्मीकि हूँ ----- आप फेस करते हैं मैं नहीं कर सकती ------ गले में जाति का ढोल बाँधकर घुमना काहँ की बुद्धिमानी है।''[2] वाल्मीकि नाम से बहुत कुछ सहा है फिर भी वे कहते हैं - ''अब तो यह 'सरनेम' मेरे नाम का एक जरुरी हिस्सा बन गया है, जिसे छोडकर 'ओमप्रकाश' की कोई पहचान नहीं।''[3] सब के विरोध के बावजूद भी ओमप्रकाशजी को वाल्मीकि से बहुत लगाव है।

1.2.10 दलित साहित्य के शीर्षस्थ रचनाकार -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने अपने जीवन में जितना भी साहित्य लिखा है, वह साहित्य यथार्थ रुप से दलित जीवन से संबधित रहा है। आपका साहित्य दलितों में चेतना उत्पन्न करता है। कविताओं में जो आग है वह बेवजह नहीं, यथार्थ है जो भोगा है सहा है उसकी अभिव्यक्ति है। इसलिए ओमप्रकाश वाल्मीकिजी को दलित चिंतन के महान कवि कहना तर्कसंगत लगता है।

1.3 ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्य -

हिंदी दलित साहित्य में जितने भी साहित्यकारों के नाम आते हैं, उनमें ओमप्रकाश वाल्मीकिजी का

---

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन (नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन: प्रथम संस्करण 1999), पृ. 153
2. .... वही ...., पृ. 158
3. .... वही ...., पृ. 158

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

नाम उल्लेखनिय है। उनके साहित्य का परिचय प्रस्तुत है -

1.3.1 जुठन (आत्मकथा) -

जूठन ओमप्रकाश वाल्मीकिजी की बहुचर्चित आत्मकथा है। उन्होंने प्रस्तुत आत्मकथा समाज में होनेवाले अपने जाति के दृष्टिकोन को प्रस्तुत किया है। उनके प्रति भद् गलियाँ होती थी, साथ ही नीचले जाति के साथ होनेवाले सवर्ण समाज द्वारा अन्याय अत्याचार को प्रस्तुत किया है। ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने 'जूठन' आत्मकथा के माध्यम से साहित्य को नई दिशा एवं न्याय देने का सफल प्रयास किया है। आत्मकथा लिखना आसान नहीं होता न कि खतरों से खाली होता है। ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने अपने मन की व्यथा को शब्द बद्ध करने का विचार काफी समय से किया था। लेकिन उसे मूर्त स्वरुप देने में सफलता नहीं मिल पा रही थी। वाल्मीकिजी ने कितनी बार लिखना शुरु किया और हर बार लिखे पन्नों को फाड डाला। जीवन में हमें अनेक उदाहरण मिल जाएँगे जिनसे हमारी जाति और वर्णगत असहिष्णुता स्पष्ट:ता दृष्टिगोचर होती है। 'जूठन' ऐसे ही उदाहरणों की श्रृंखला है, जिन्हें वाल्मीकि जी ने अपनी पूरी संवेदनशीलता के साथ खुद भोगा है। इस आत्मकथा में लेखक ने स्वाभाविक ही अपने उस 'आत्म' की तलाश करने की कोशिश की है जिसे भारत का वर्णतंत्र सदियों से कुचलने का प्रयास करता रहा है, कभी परोक्ष रुप में कभी प्रत्यक्षत:। इसलिए इस आत्मकथा की पंक्तियों में पीडा भी है, असहायता भी है, आक्रोश भी है और क्रोध के साथ-साथ अपने आपको आदमी का दर्जा दिए जाने की सहज मानवीय इच्छा भी।

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने अपने यथा सत्य अनुभवों को आत्मकथा में रेखांकित किया है। जूठन को पढते समय पाठको का मस्तीष्क उत्तेजित होता है। जूठन में भरतीय समाज व्यवस्था में व्यक्त धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा अंधविश्वासों से भरा विषमता का चित्रण दिखाई देता है। जूठन के बारे में डॉ. अजमेर सिंह काजल लिखते हैं - ''जूठन तथाकथित संभ्रांत समाज एवं उनकी झूठी शान का वर्णन ही नहीं करती अपितु उसकी मानसिकता के तंतुओं को छिताराकर प्रस्तुत करनेवाली कृति है।''[1] सारांशत: यह आत्मकथा भंगी चूहड़े जन जाति के दु:ख, दर्द, व्यथा, वेदना, रुढी, परंपरा, रीति-रिवाज,

---

1. डॉ. अजमेर सिंह काजल, 'जूठन', भाषा, नंदकिशोर मिश्र संपा., (नई दिल्ली, केंद्रीय हिंदी निदेशालय: सितंबर अक्तूबर 2000), पृ. 11

अंधश्रध्दा, अशिक्षा और पक्षुतुल्य जीवन का जीवंत दस्तावेज है |

1.3.2 सलाम (कहानी संग्रह)

ओमप्रकाश वाल्मीकि का 'सलाम' बहुचर्चित प्रसिध्द कहानी संग्रह है I इसका प्रकाशन सन 2000 में राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है I इस कहानी संग्रह ने नवें दशक में दलित कहानी की यात्रा का एक अह्म पडाव पार किया है I दलित जीवन की यह प्रतिबध्द, मार्मिक और संवेदनशील कहानियाँ हैं I कहानीयों के पढ़ने पर दलितों के प्रति व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश, व्यथा विन्यास के अनुरुप तर्क और विचार, दलितों का संघर्ष दृष्टिगोचर होता है I सलाम कहानी संग्रह में 'सलाम', 'बैल की खाल', 'सपना भय', 'कहाँ जाए सतिश', 'जिनावर', 'कुचक्र', 'अम्मा', 'खानाबदोश', 'गो हत्या ग्रहण', 'बिरम की बहु', 'अंघड' आदि कहानियाँ है I 'कहाँ जाए सतिश' में सतीश संघर्ष का प्रतीक है I 'अप्पो दीपो भव' को आदर्श मानकर दलितों में नई चेतना का प्रादुर्भाव हुआ है I

1.3.3 'घुसपैठिंये' (कहानी संग्रह) -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी का यह दूसरा कहानी संग्रह है I इसका प्रकाशन सन 2003 को राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली से हुआ है I प्रस्तुत कहानी संग्रह में दलित जीवन के कुछ पहलू समस्याएँ एवं परंपराएँ आदि प्रस्तुत हैं I दलितों का जीवन संघर्ष प्रस्तुत है I इस संग्रह में ' घुसपैठिये', 'यह अन्न नहीं', 'मुंबई कांड', 'शवयात्रा', 'प्रमोशन', 'कुडाघर', 'मैं ब्राह्मण नही हूँ', 'रिहाई', 'ब्रम्हास्त्र', 'जंगल की रानी' आदि कहानियाँ संकलित है I

1.3.4 'सदियों का संताप' (कविता संग्रह)

ओमप्रकाश वाल्मीकि का यह पहला कविता संग्रह है जिसका प्रकाशन सन् 1989 में हुआ I प्राचीन सभ्यताओं में स्वर्ग की कल्पना की गई है भले ही यह वंचित वर्ग को ठगने का षडयत्रं रहा हो परंतु सदियों से सारी सभ्यताओं का विनाश होता आया है I लेकिन भारतीयों का स्वर्ग कैसा भी हो वह हमारी वर्ग जाति व्यवस्था से उपर नहीं हो सकता, इसलिए आज दलित वहाँ जाने से इन्कार कर देता है I कविता संग्रह में 'ठाकूर का कुआँ', 'ज्वालामुखी', 'मानचित्र', 'चोट', 'कविता और फसल', 'पटाक्षेप', 'युग चेतना', 'झाडूवाली', 'तनी मुहियाँ', 'हथेलियों मे थमा सिर', 'पत्थर', 'सदियों का संताप',

'तब तुम क्या करोगे', आदि कविताएँ संग्रहित हैं। इन कविताओं में सवर्ण समाज से दलितों के स्वतंत्रत का पुकार प्रतीत होती है।

1.3.5 'बस्स ! बहुत हो चुका' (कविता संग्रह) -

ओमप्रकाश वाल्मीकि का यह दूसरा कविता संग्रह है। जिसका प्रकाशन सन् 1997 में वाणी प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा हुआ है। अच्छी रचना की पहली शर्त है कि उसमें समय की सच्चाई हो। इन कविताओं में जहाँ एक ओर वर्ण व्यवस्था के प्रति विद्रोह है वहीं दूसरी ओर दलित वर्ग की महत्ता को स्थापित करने की ललक भी है।

तथाकथित छोटी जाति में पैदा होकर भी अपने को समाज की मुख्य धारा से जोडने की उत्कृष्ट जिजीविषा इन कविताओं में दिखती है, यही उसकी जीवनी शक्ति है। इस कविता संग्रह में 'पेड़', 'वह मैं हूँ', 'उपोत्पाद', 'बाहर आयेंगे', 'एक दिन', 'खेत उदास है', 'घृणा तुम्हे मार सकती है, 'यातना', 'पत्थर', 'हिंसा का अर्थ', एवं 'अकाल', 'वे भयभीत है', 'कभी सोचा है', 'लाशों के बाद भी', 'कर्फ्यू के बावजूद', 'दंगो के बाद', 'पोस्टर', 'चूप्प रहना', 'जाति', 'वे भूखे है', 'बस्स! बहुत हो चुका', 'भय', 'वंशज', 'सत्य की परिभाषा'आदि कविताएँ संकलित हैं।

1.3.1 'अब और नही' (कविता संग्रह)

यह ओमप्रकाश वाल्मीकिजी का तीसरा कविता संग्रह है, जो सन 2009 में राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसमें दलितों के शोषण का यथार्थ चित्रण है। आक्रोश जनित गंभीर अभिव्यक्ति में जहाँ अतीत के गहरे दंश वही वर्तमान की विषमता पूर्ण मोहभंग कर देनेवाली स्थितियों को इन कविताओं में गहनता और सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। प्रस्तुत कविता संग्रह में दलित कविता के मानीवय पक्ष को प्रभावशाली ढंग से उभारा है। दलित कवि जीवन से असंम्पृक्त नहीं रह सकता। वह घृणा में नहीं प्रेम में विश्वास करता है। ऐतिहासिक संदर्भो को वर्तमान से जोडकर मिथकों को नए अर्थो में प्रस्तुत किया है। दलित कविताओं पारंपारिक प्रतीकों मिथकों को नये अर्थ और संदर्भों से जोडकर देखे जाने की प्रवृत्ती दिखाई देती है जो दलित कवियों की विशिष्ट पहचान बनाती है।

इस कविता संग्रह में 'लेखा जोखा', 'आस्थि-विसर्जन', 'आइना', 'जूता', 'जाति', 'किष्किंधा', 'दीवार के आर पार', 'काले दिनों में', 'कोई खतरा नहीं', 'कोलाहल', 'हमलावर',

'विस्फोट', 'मौत का चेहरा', 'एक और युध्द', 'शब्द जूठ नहीं बोलते', 'प्रतिबंध', 'दहशत', 'जहर', 'लावा', 'इतिहास', 'असहमति', 'आंदोलन', 'रोशन के उस पार', 'रंगो का बोझ', 'विध्वंस बनकर खडी होगी

नफरत', 'विरासत', 'बयान', 'अपने हिस्से की रोटी' आदि कविताएँ संकलित है।

'किष्किंधा' कविता में 'बालि' का आक्रोश दलित कवि के आक्रोश में रुपांतर होकर कविता के एक विशिष्ट और प्रभावशाली आयाम को स्थापित करता है -

> ''मेरा अँधेरा तब्दील हो रहा है
> कविताओं में
> याद आ रही है मुझे
> बल्कि की गुफा
> और उसका क्रोध।''[1]

कविताओं का यथार्थ गहरे भावबोध के साथ सामाजिक शोषण के विभिन्न आयामों से टकराता है और मानवीय मूल्यों की पक्षधरता में खडा दिखाई देता है।

1.3.7 दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र -

ओमप्रकाश वाल्मीकि का यह आलोचनात्मक ग्रंथ है। इसका प्रकाशन सन 2001 में राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। यह पुस्तक दलित साहित्य आंदोलन के कमी को पुरी करती है, साथ ही यह रचना साहित्य में स्थापित तथा वर्चस्वशाली गुठों को आस्थाओं के बल पर चुनौती भी देती है।

1.3.8 नाटक -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने महाराष्ट्र में 'मेघदुत' नामक नाट्य संस्था की स्थापना की थी। इसके माध्यम से बहुत सारे नाटक लिखें। उनके निम्नलिखित नाटकों का सफलता से मंचन हुआ है।

1. 'आधे अधुरे' (मोहन राकेश) अभिनय एवं प्रस्तुतिकरण के लिए पुरस्कार
2. 'दुलाराबाई' (मणिमधुकर) अनुदित

---

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, अब और नहीं (नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन: प्रथम संस्करण 2009), पृ. 23

3. ‘एक था गधा उर्फ अलादाद ख्वाँ’ (शरद जोशी)

4. ‘अंधो का हाथी’ (शरद जोशी)

5. ‘हिमालय की छाया’ अनुदित (वसंत कानेटकर) अभिनय निर्देशन एवं प्रस्तुतिकरण के लिए पुरस्कार

6. ‘सिंहासन खाली है’ अनुदित (सुशीलकुमार) अभिनय के लिए पुरस्कार

7. ‘इकतारे की आँख’ अनुदित (मणिमधुकर)

8. ‘अ स्टडी इन द नेड’ अनुदित (इंग्लिश)

9. ‘दो चेहरे’ (स्वयंलिखित) अभिनाय के लिए पुरस्कार

10. ‘अब्दुला दीवाना’ (लक्ष्मीनारायण लाल)

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी को नाटक में अभिनय तथा निर्देशन के लिए बडी रुचि थी। उन्हें अनेक जगहों पर अभिनय के लिए पुरस्कृत किया गया है।

1.3.9 अन्य

अनेक कथा संकलनो एवं कविता संग्रहों में रचनाएँ संकलित, प्रज्ञा साहित्य के दलित साहित्य विशेषांक का आतिथ्श संपादन, पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कहानियाँ, कविताएँ प्रकाशित, विभिन्न भाषाओं में कविताएँ और कहानियाँ अनुदित, प्रथम दलित लेखक साहित्य सम्मेलन 1993 नागपुर के अध्यक्ष। जूठन का अंग्रेजी अनुवाद, जूठन का ‘जूठ’ नाम से पंजाबी अनुवाद।

1.3.10 सम्मान -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी को अपने जीवन में निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

‘डॉ अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार - 1993।’

‘परिवेश सम्मान - 1995।’

‘जयश्री सम्मान - 1996।’

‘कथाक्रम सम्मान -2000, 2011।’

निष्कर्ष -

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी के जीवन परिचय एवं साहित्य के विवेचन विश्लेषण के पश्चात यह प्रामाणिक निष्कर्ष निकालता है कि ओमप्रकाश वाल्मीकिजी दलित साहित्य लेखन के अग्रणी कवि हैं, जिन्होंने दलित साहित्य के कहानी क्षेत्र के साथ-साथ कविता के क्षेत्र में भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। नाटक और आत्मकथा लिखकर दलित साहित्य लेखन में अपनी विशिष्टता का परिचय दिया है। उनका व्यक्तित्व प्रामाणिक अध्ययनशील, स्वाभिमानी, साहसी, कलाप्रेमी, अंधश्रद्धा के विरोधी यथार्थ के हिमायती और समाज में बुरी स्थितियों के परिवर्तन की आत्मीय भावना से ओतप्रोत दृष्टिगोचर होता है। चुहड़े जाती में जन्म होने के कारण बचपन से लेकर आज तक अनेक जातीय दंश, पीड़ा, यातना, अपमान तथा उपेक्षा का सामना करना पडा। बचपन में गंदगी भरे माहौल से किसी तरह उपजे, मास्टरों की दहशत और बच्चों द्वारा 'चुहड़े का' कह कर चिढाना आज भी उन्हें दस्तक देता है। वाल्मीकिजी ने दलितों की पीड़ा, वेदना को अपने गहन अनुभव की विस्तृत परिधि में प्रस्तुत किया है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित जीवन कितना दर्दनाक, दु:खदायी, भयानक और क्रुर होता है, इसे भोगा है। गहरा अनुभव दलित साहित्य को सशक्त और विकसित करता है। उन्हें सामाजिक वातावरण ने कभी चैन से जीने नहीं दिया। सत्य और प्रामाणिकता के दो पग लेकर चलनेवाले ओमप्रकाशजी ने बहुत कुछ बर्दाश्त किया हैं और इसी बर्दाश्त कर लेने की आदत ने उनसे बहुत कुछ छिना है।

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी की आत्मकथा 'जूठन' ने तो चारों तरफ तहलका मचा दिया, जिसमें लेखक ने स्वाभाविक ही अपने 'आत्म' को तलाश करने की कोशिश की है। उनके कहानी संग्रह 'सलाम' दलितों की स्थिति को स्पष्ट करना चाहता है। जहाँ दलित अपने आपको आदमी की संज्ञा प्राप्त करने के लिए संघर्षरत है। वाल्मीकिजी का कहना है कि दलित साहित्य अपने समय से लडते हुए आनेवाले कल की बेहतर जिंदगी के लिए आशावादी है। तमाम विपरित परिस्थितियों, चुनौतियों के संकट के बावजूद दलित साहित्य ने अपनी ऊर्जा और संम्भावनाएँ क्षीण नहीं होने दी है। कुल मिलाकर दलित साहित्य भविष्य का साहित्य है।

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी की कविताएँ दलित समाज की यथार्थ स्थिति को दिखाती हैं। हर कविता दलित जनता की यातनाओं को प्रकट करती हैं। दलित जनता किन समस्याओं से जूझ रही है इसका

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करती हैं । कवि ने दलितों की यथार्थ स्थिति का वर्णन करते हुए उनमें स्वाभिमान को बनाए रखा है । कवि अपने रचनाओं में दलितों, किसानों, मजदूरों की सामाजिक स्थिति को दिखते हुए सामाजिक, शैक्षिक, और आर्थिक विकास की मांग करते हैं । सभी कविताओं में परिवर्तनवादी स्वर दिखाई देता है ।